12_Nav pradesh Page_04.qxd 5/12/2018 7:32 AM Page 1

मां से बढ़कर कुछ नहीं इस दुनिया में

मदर्स डे

मां, कितना मीठा, कितना अपना, कितना गहरा और कितना खूबसूरत शब्द है। समूची पृथ्वी पर बस यही एक पावन रिश्ता है जिसमें कोई कपट नहीं होता। कोई प्रदूषण नहीं होता। इस एक रिश्ते में निहित है छलछ्लाता ममता का सागर। शीतल और सुगंधित बयार का कोमल अहसास। इस रिश?ते की गुदगुदाती गोद में ऐसी अव्यक्त अनुभूति छुपी है जैसे हरी, ठंडी व कोमल दूब की बगिया में सोए हों।

मां, इस एक शब्द को सुनने के लिए नारी अपने समस्त अस्तित्व को दांव पर लगाने को तैयार हो जाती है। नारी अपनी संतान को एक बार जन्म देती है। लेकिन सच तो यह है कि बच्चे के बड़े होने तक अलग-अलग रूपों में खुद उसका पुनर्जन्म होता है। यानी एक शिशु के जन्म के साथ ही स्त्री के कई खूबसूरत रूपों में लगातार अभिव्यक्त होती है।

पल- पल उसके दिल के सागर में ममता की मार्मिक लहरें आलोड़ित होती है। अपने हर 'ज्वार' के साथ उसका रोम-रोम अपनी संतान पर न्योछावर होने को बेकल हो उठता है। नारी अपने कोरे कुंवारे रूप में जितनी सलोनी होती है उतनी ही सुहानी वह विवाहिता होकर लगती है लेकिन उसका नारीत्व संपूर्णता पाता है मां बन कर। संपूर्णता के इस पवित्र भाव को जीते हुए वह एक दिव्य अलौकिक प्रकाश से भर उठती है। उसका चेहरा अपार कष्ट के बावजूद हर्ष से चमकने लगता है जब एक नर्म गुदगुदाता जीव उसके कलेजे से आ लगता है। उसका अपना 'प्राकृतिक सृजन' जब उसे देखकर चहकता है तो उसकी आंखों में खुशियों के हजारों दीप झिलमिलाने लगते हैं।

लाज और लावण्य से दीपदिपाते-पुलकित इस भाव को किसी भाषा, किसी शब्द और किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं होती। 'मां' शब्द की पवित्रता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि हिन्दू धर्म में देवियों को मां कहकर पुकारते है। बेटी या बहन के संबोधनों से नहीं। मदर मैरी और बीवी फातिमा का ईसाई और मुस्लिम धर्म में विशिष्ट स्थान है।

माँ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एक दिवस नहीं एक सदी भी कम है। किसी ने कहा है ना कि सारे सागर की स्याही बना ली जाए और सारी धरती को कागज मान कर लिखा जाए तब भी मां की महिमा नहीं लिखी जा सकती। इसीलिए हर बच्चा कहता है मेरी मां सबसे अच्छी है। जबकि मां, इसकी- उसकी नहीं हर किसी की अच्छी ही होती है, क्योंकि वह मां होती है। मातृ दिवस पर हर मां को उसके अनूठे अनमोल मातृ-बोध की बधाई।

दिल को छु लेने वाली एक सच्ची घटना

तू कितनी अच्छी है, कितनी प्यारी है

वो तो बस इस दुनिया के रिवाजो कि बात है- वरना इस संसार में माँ के अलावा कोई भी सच्चा प्यार नहीं करता

शायद आपको याद हो की अभी कुछ महीनो पहले जापान में बहुत भयानक भूकंप आया था. उसी समय दिल को छु लेने वाली एक सच्ची घटना भी हुई. भूकंप से काफी ज्यादा नुक्सान हो गया था, काफी घर टूट गये थे जिसकी वजह से बचाव कार्य करने वालो की टीम को वहा पर बुलाया गया. तभी एक बचाव कार्य की टीम का एक व्यक्ति एक टूटे हुए घर की छान-बिन करने पहुचा.

छान-बिन ज्यादा गहराई से नहीं की गई परन्तु कुछ समय बाद वहा उनको एक महिला दिखी जो की बहुत ही अजीब अवस्था में वहा बैठी थी. अवस्था ऐसी थी जैसे लोग पूजा करने के लिए मंदिरों में बैठते हैं या फिर आप बोल सकते हैं नमाज़ पढने के लिए मस्जिद में.

कड़ी मुश्कत के बाद एक बचाव कार्य की टीम का व्यक्ति उस महिला तक पहुचा और उसने उस औरत की ओर अपना हाथ बढाया. उस आदमी को लगा की शायद वो महिला जिंदा हो, परन्तु उसकी पीठ और सर पर काफी चोट लग चुकी थी और छू कर देखा गया तो उस महिला का शारीर बिलकुल ठंडा हो चूका था.

बचाव दर को समझ आ गया की अब वो महिला जिंदा ना थी, ऐसा जानने के बाद वो उस घर को छोर दुसरे घरो की ओर छान-बिन करने चल पड़े.

लेकिन फिर कुछ समय बाद उस टीम के हेड ने कहा की ÷ पता नहीं क्यों, मुझे वो घर अपनी तरफ खीच रहा है, कुछ तो है उस घर में जो मुझे बोल रहा है की मै उस घर को इस तरह से छोर के ना जाऊ. इसलिए फिर उस टीम के हेड ने अपनी टीम को आदेश दिया कि वो दुबारा से उस घर की अच्छी से जाच करे.

बचाव दल के व्यक्ति फिर दुबारा से उस घर की ओर गये, इस बार अच्छे से जाच हुई, उन्होंने उस महिला को उस अवस्था से निकालने की कोशिश की.

जब वो उस महिला को वहा से निकाल रहे थे तब उन्होंने देखा की वहा बगल में एक टोकरी में 3 महीने का एक बच्चा मखमल के कपडे में लिपटा हुआ है, जो की उस महिला के शारीर से ढका हुआ था.

बचाव दल के अलावा वहाँ और भी बहुत सारे लोग खड़े थे और उन सभी को एक बात समझ में आ गई कि ÷उस महिला ने अपने बच्चे को बचाने के लिए अपनी जान की कुर्बानी दे दी÷.

भूकंप के समय जब उस औरत को एहसास हुआ की अब उनका घर गिरने वाला है और उनके पास इतना वक्त नहीं है की वो अपने बच्चे को लेकर घर से बाहर जा सके, तो भूकंप से अपने बच्चे को बचाने के लिए वो उस अवस्था में बैठ गई.

ज़ल्द ही वहाँ डॉ की एक टीम भी पहुच गई, बच्चे की जाच करने के बाद उन्हें पता चला की बच्चा अभी बेहोश और वो ज़ल्द ही ठीक हो जायेगा.

तभी एक व्यक्ति ने उस मखमल के कम्बल को उस टोकरी में से हटाया, वहाँ उसको एक चिठ्ठी मिली जिसमे लिख था-

मेरे बच्चे,
अगर तुम बच गये
तो बस इतना याद रखना
कि तुम्हारी माँ तुमसे
बहुत प्यार करती थी

उस चिठ्ठी को पढने के बाद, वहा उपस्थित सभी लोगो की आँखे नम हो गई।

बाजार में सज गए हैं आकर्षक गिफ्ट्स

मां, परमात्मा ने हमें इस सृष्टि पर रचा और तुमने हमें जन्म दिया। तुमने हमें वह स्नेहभरा आंचल दिया, जिसकी छांव में बचपन से लेकर जवानी तक का सफर सुरक्षित तय किया। दुःख में, सुख में, जीवन के हर पल में, तुमने संघर्षों से लड़ने की शक्ति दी और खुशी को अपनाना सिखाया। मां तू धन्य है, तू धन्य है, तू धन्य है...।÷ ये चंद पंक्तियां मां के स्नेहभरे अहसास को हमारे रोम-रोम में भर देती है। भावनाओं से परिपूर्ण ये पंक्तियां मदर्स-डे के अवसर पर विशेष रूप से उपहारों पर अंकित की गई है। टैडीबियर, कैंडिल्स, हैंडबैग, ग्रीटिंग काड्?स व कोटेशंस के रूप में उपहार अपनी मां को देने के लिए मार्केट से खरीदे जा रहे हैं। यूं तो उपहार कई रूपों व आकार-प्रकारों में हो सकते हैं, लेकिन यदि उपहारों पर भावनाएं व्यक्त की गई हों तो ये किसी अनमोल धरोहर से कम नहीं होते। इन्हें जीवनभर संभालना हमारे लिए जरूरी हो जाता है। मदर्स-डे पर मार्केट में उपहारों की बहार आ गई है, जो विशेषतौर से प्यारी मम्मी के लिए डिजाइन किए गए हैं। इन उपहारों की खासियत है कि लोग कोटेशंस के रूप में इनमें अपनी मां को मदर्स-डे की शुभकामनाएं देने के लिए चंद स्नेहभरी पंक्तियां अंकित कर दी गई हैं। जो हर मां के लिए उससे बच्चे की ओर से स्पेशल गिफ्ट होगा। मार्केट में कोटेशंस व संदेश लिखे गए ग्रीटिंग काड्?स युवाओं को खास आकर्षित कर रहे हैं। ये काड्?स हार्ट व फ्लॉवर शेप में भी मार्केट में मौजूद हैं, जिनकी कीमत 20 से 200 रुपए तक है। इसके अलावा कैंडिल्स व टेडीबियर के रूप में भी अनेक आइटम्स मार्केट में उपलब्ध हैं, जिन्हें हम मदर्स डेपर अपनी मां को गिफ्ट कर सकते हैं। साथ ही फ्रिज मैग्नेट व छोटे-छोटे अनेक तोहफे मां के लिए खासतौर से डिजाइन किए गए हैं।

हर मां को सलाम

मोनिका गुप्ता

हर साल हम 'मदर्स डे' मनाते हैं. माँ, मम्मी, माताजी, आई या मामॅ नाम चाहे कितने ही हो पर नामो मे छिपा प्यार एक ही है. माँ के आचँल मे है 100 प्रतिशत ममता ही ममता. हमारी कोई परेशानी उनसे छिपी नही रह्ती. ना जाने वो बिना बताए अपने आप कैसे जान जाती हैं. माँ का नाम लेते ही आंखों मे अलग सी चमक आ जाती है. अपनी बात शुरु करने से पहले मैं उनके बारे मे कहना चाहूंगी कि उसको नही देखा हमने कभी पर उसकी जरुरत क्या होगी, ए माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की मूरत क्या होगी है ना, मैं सही कह रही हूँ ना.

सच, भगवान का दूसरा नाम ही है माँ. हर जगह तो भगवान का जाना सम्भव नहीं हैं इसलिए उसने माँ को बना दिया. बेशक समय कितना ही बदल जाए पर हमारे देश के संस्कार ही ऐसे है कि माँ का प्यार ना कभी बदला है ना कभी बदलेगा.

बताने की बाते तो ढेर सी है पर मैं दो बाते ही बताऊगी. बचपन मे मुझे राजमाह चावल बहुत पसंद थे. पसंद तो अब भी हैं पर मैं तब की बात बता रही हूँ कि जब मैं और मेरा भाई स्कूल से लौट कर आते थे और पता चलता था कि आज राजमाह चावल बने हुए हैं. तो मैं सारे के सारे खा जाती थी, यानि मम्मी के हिस्से के भी. पर मम्मी कभी नही कहती थी कि यह चावल उनके हिस्से के है वो ना सिर्फ खुशी खुशी खिलाती बलिक बालो मे हाथ भी फेरती रहती. तब मै यही सोचती थी कि जब मै भी बडी हो जाऊगी तब मै अपने हिस्से के चावल खुद ही खाऊगी. अपने बच्चो को नही दूगी. पर माँ बनने के बाद अहसास हुआ कि सब कुछ तो बच्चो का ही है बच्चो ने खा लिया मानो माँ ने खा लिया. सच पूछो तो बच्चों को खुश देखकर, बच्चों की खुशी मे इतनी खुशी मिलती है, कि शब्दों में बताई नही जा सकती. यह बात माँ बनने के बाद ही जानी.

मुझे याद है कि जब मै पहली बार घर से बाहर हॉस्टल पढ़ने गई थी, तब हमारी मैस में सब्जी के तो डोगे मेज पर रख देते और चपाती का एक एक से पूछ्ते थे, कि लेनी है या नही. पता है घर मे तो आदत थी, कि मना करने के बाद भी एक चपाती तो आएगी ही आएगी, क्योंकि मम्मी कहती यह छोटी सी चपाती तेरे लिए ही बनी है. अब जब मैस वाला भैया पूछ्ता कि और चाहिए तो मै यह सोच कर मना कर देती कि एक तो आएगी ही आएगी. पर मना करने के बाद वो भला क्यो चपाती देगा. हॉस्टल में शुरु में तो बहुत अजीब लगा पर धीरे-धीरे आदत पड़ गई बात खाने की नही है बात उस प्यार की है जो हमे मिला जो ऐसी यादे छोड़ गया, जो हमे जीवन भर नही भूलेगी.

वही आज हम अपने बच्चों मे देख रहे हैं कल को जब वो बड़े हो जाएंगे, वही बात फिर से दोहराई जाएगी. सच पूछो तो ऐसी ममतामयी माँ से बार-बार लिपटने का मन करता है. मन करता है कि फिर से बच्चे बन जाए और माँ के आंचल से सारी दुनिया देखें जैसे बचपन मे देखते थे.

पाठकों की बात

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

अपने भीतर के सच को

अपने भीतर के सच को जानिए उसके प्रकाश को प्रज्जवलित कीजिये जीवन की राह में सभी अपनी अपनी मंज़िल की और अग्रसर है ... रास्ते में जो मिले उसे प्रकाशित करते चलिए .. यही बड़प्पन है आप माध्यम बनेंगे और दूसरों को फायदा होगा। **भागीरथी सिंह**

जाने कितनी बीत गयी

जाने कितनी बीत गयी सदियां, ये रात अब भी क्यों ढलती नहीं, कानों में गूंजते रहते हैं तेरे लफ्ज़, तन्हाईयाँ खामोश क्यों रहती नहीं। **प्रिया वाच्छानी**

खास पाती

माँ एक शब्द नही है संसार बसता है

माँ एक शब्द नही है संसार बसता है उसमें, अपने खून से सींचकर हमे जीवन देती है, कितनी भी मुश्किलें क्यूँ न सहे, मगर कभी कुछ नही कहती है, कब मुझे भूख लगी कब मुझे प्यास लगती है, न जाने कैसे समझ जाती है माँ, बिना मेरे कुछ कहे सब समझ जाती है माँ, खुद तो भूखे रह लेगी माँ, अपने हिस्से का हर निवाला क्यूँ बांट देती है माँ, पालपोसकर इतना बड़ा कर देती है माँ, फिर भी कभी एहसान जताती नही माँ, कभी प्यार से डांट देती है माँ, और एक पल में ही मना लेती है माँ, नसीब वालो को मिलता है प्यार माँ का, मेरे दिल मे बसती है मेरी माँ, कितना प्यार देती है माँ ये शब्द कम पड़ जायेंगे, मेरे ज़िन्दगी का अहम हिस्सा है मेरी माँ। **उपासना पांडेय**

कल तक जो आँसू, बाढ़ बन

कल तक जो आँसू, बाढ़ बन कर डुबा जाते थे मुझे, आज शीतल स्वच्छ जल, बन सींच रहे हैं, मेरे दिल की बगिया को, जहाँ रँग बिरंगे फूल, खिले हैं तेरे प्रेम के तितलियाँ मँडरा रही है मकरन्द की चाह में भौंरे गुनगुना रहे हैं प्रेमगीत तुम गोद में सर रखे मेरे मंद मंद मुस्करा रहे हो दो जोड़ी प्रेम भरी निगाहें डूब रही है क्षितिज के पार। **स्नेहा पाण्डेय**

मैं पंक्षी हूँ उड़ जाऊँगी इक दिन

मैं पंक्षी हूँ उड़ जाऊँगी इक दिन दूर गगन में, खुशबू बनके घुल जाऊँगी बस सबके ही दिल में। **रश्मि ठाकुर**

ख्वाब बुनने क्या होते

ख्वाब बुनने क्या होते हैं आसान? कुछ ख्वाहिशें कुछ हसरतें कुछ चाहतें रखनी पड़ती हैं अधूरी जलना पड़ता है तड़पना पड़ता है सारी जिंदगी घुट घुट कर मरना पड़ता है तब पनपते हैं जवान होते हैं और निखरते हैं फिर ये ख्वाब हमारे। **सीमा भाटिया**

ये दबदबा, ये हुकूमत,

ये दबदबा, ये हुकूमत, ये नशा, ये दौलतें... सब किरायेदार हैं, घर बदलते रहते हैं.. मुस्कुराहट, अपनापन, स्वभाव ये सब अपने हैं साहेब... इनसे ही हम सब फलते-फूलते हैं। **कुसुम शुक्ला**

आज के ट्वीट

हर व्यक्ति में अच्छाइयाँ

हर व्यक्ति में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनो होती हैं ..अब ये सामने वाले की मानसिकता पर निर्भर है कि वो किससे ज़्यादा प्रभावित होता है .... उसकी अच्छाई से या बुराई से? **अंजना सिंह सेंगर**

देह, गंध का विलोम, भूतल

देह,गंध का विलोम, भूतल पर समाहित कर, पश्चिम में अस्त होते सूर्य को, जब लांघते हैं पक्षी, तुम अपने बासी रूप में, पूर्ण लगते हो। **शालिनी मोहन**